भूमिका

सुप्रसिद्ध लेखक एवं वक्ता
संदेश बी. भालेकर

सम्यक प्रारंभ

ओशो हमारे समय के बुद्धपुरुष हैं। यह सदी बड़े सौभाग्यशाली लोगों की सदी है। और निरंतर खोज कर, जान कर मानने वाले ईमानदार लोगों की सदी है। ओशो हमें इस सदी में एक वैज्ञानिक द्रष्टा के रूप में प्राप्त हुए हैं। उनके साथ संसार के राजनीतिज्ञ और पंडित-पुरोहित जिस प्रकार का व्यवहार आज कर रहे हैं, वह देख कर वेदना से हृदय छलनी हो जाता है। यह बात और है कि सदियों से बुद्धपुरुषों के साथ प्रस्थापित व्यवस्था के ठेकेदारों ने ऐसा ही अभद्र व्यवहार किया है। लेकिन अब की बार वे स्वयं मात खा रहे हैं। शोला अब लाख पर्दों को जला कर अपनी तेज-तर्रार रोशनी के साथ निखर कर बाहर आ रहा है। आज संसार का तमाम बुद्धिमान वर्ग ओशो के साथ है। इस अपूर्व घटना ने धर्मपंडितों और उनके सहोदर राजनीतिज्ञों की नींदें हराम कर दी हैं।

ओशो के शब्द कोरे शब्द नहीं, मनुष्य के आमूल-चूल रूपांतरण के वे क्रांतिबीज हैं। तीसरे महायुद्ध के विनाश के कगार पर खड़ी मनुष्यता के पास आज ज्ञान के, जानकारी के अंबार भरे पड़े हैं। फिर भी विनाश के काले बादल सिर पर मंडरा रहे हैं। अतः इस विकलांग मनुष्यता को एक समुचित रूपांतरण की ओर जाने के अतिरिक्त भविष्य में कोई आशा नहीं है। ओशो तमाम विघातक बाधाओं के बावजूद इस महत कार्य में निरंतर लगे हुए हैं। यह उनकी करुणा का प्रतिफल है।

प्रस्तुत प्रकाशन उनके ध्यान शिविरों के प्रवचनों का संकलन है। इन प्रवचनों में ओशो ने ईश्वरवादी और ईश्वर-विरोधी दोनों की आंखें खोल दी हैं। दोनों ही भटके हैं। ईश्वरवादी मंदिरों में जाकर प्रभु से चूक गया और ईश्वर-विरोधी मंदिरों से लड़ कर। बात अजीब सी मालूम होती है लेकिन है सत्य। ओशो ने हजार-हजार स्थानों पर ईश्वर को, उसके अस्तित्व को, उसकी अधिसत्ता को नकारा है। ईश्वर के साथ जुड़ी हुई पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, अवतारवाद और पाखंड जैसी धारणाओं को उन्होंने अस्वीकृत कर दिया है। क्या मनुष्य मंदिरों के बगैर, मूर्तियों के बगैर, धर्मग्रंथों के बगैर धार्मिक नहीं हो सकता? यह कैसी लंगड़ी धार्मिकता हुई जिसे मंदिर और मूर्तियों की बैसाखी के सहारे चलना पड़े? यह तो जीवन को बोझिल बनाना हुआ, रुग्ण ही बनाना हुआ। उसे तो फूल की तरह प्रसन्न होना चाहिए। पंछी की तरह गीत गाता हुआ होना चाहिए। उन्हीं के शब्दों में, 'मंदिर की मूर्ति उन्होंने ईजाद की है जो सब तरफ से परमात्मा से बचना चाहते हैं।' इसलिए आदमियों के बनाये उस भगवान के संबंध में वे कुछ नहीं कहते। मूर्तिपूजा का ऐसा अत्यंत मर्मग्राही एवं हृदय-स्पर्शी खंडन उन्होंने किया है। साथ ही भगवान, निर्गुण, निराकार, परमात्मा, संसार, ध्यान आदि संकल्पनाओं, प्रतीकों को उन्होंने अपनी जीवंत प्रतिभा की नयी रोशनी प्रदान की है।

वे मनुष्यता को निर्दोष, निर्विकल्प बनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। जीवन के तमाम क्रिया-कलापों को विशुद्ध होश से भर देना चाहते हैं, ताकि मनुष्य-जाति में महत क्रांति फलित हो। उनके तथ्यगत तर्क हमें उनकी

स्वीकृति के लिए बाध्य नहीं करते अपितु अंतर्मन से तैयार ही कर देते हैं। उनका प्रयास अहंकार को स्वीकार में, घृणा को प्रेम में, बेहोशी को होश में परिणत करने का प्रयास है। उसके लिए उन्होंने ईश्वर, आत्मा या परमात्मा के बगैर ध्यान की विधियां दी हैं। वे कहते हैं, 'ध्यान स्वेच्छा से लाई गयी मृत्यु का नाम है।' ध्यान अपने ही भीतर के सागर में उतरने की कला है। ईश्वर को पाया नहीं जा सकता। ईश्वर हमारे भीतर घटित हो सकता है। उसे घटित करने के लिए वे ध्यान-पथ से धार्मिकता की ओर हमें ले जाते हैं।

ओशो किसी देवता की बात नहीं करते। फिर परंपरागत ईश्वरवाद का खंडन करने वाले ओशो स्वयं मनुष्य को इतनी सहजता के साथ किस ईश्वरीय स्थिति में ले जाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं, किस ईश्वर या प्रभु की वे तलाश करते हैं, आप स्वयं इसमें देखें। वह रेशमी घूंघट मैं अपने ही हाथों से उठा कर आपका आनंद छीनना नहीं चाहूंगा।

सूरज की किरणें सप्त रंगों से परिपूर्ण होती हैं। जरूरी नहीं, जो रंग उसका मुझे दिखा, केवल वही आपको दिखे। यह प्रत्येक का निजी मामला है कि वह ओशो के वचनों से क्या बोध लेता है। मुझे ओशो के शब्दों का प्रस्तोता बनने के योग्य समझा गया, यह उनकी अनुकंपा है। मेरे जीवन को आनंद विभोर कर देने के प्रति प्रकाशक का मैं आजीवन ऋणी हूं।

संदेश बी. भालेकर
अधिवक्ता
746, वैशाली नगर, नागपुर

श्री संदेश भालेकर महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध लेखक एवं वक्ता हैं। भगवान बुद्ध तथा अंबेदकर पर आपके लेख खूब सराहे जाते हैं तथा कालेजों और विश्वविद्यालयों में आपको प्रवचन देने के लिए निरंतर आमंत्रित किया जाता है। आपने ओशो के साहित्य का खूब गहराई से अध्ययन किया है, जिसकी मधुर छाप इनके व्याख्यानों में स्पष्ट परिलक्षित होती है। ओशो को आप गहराई से प्रेम करते हैं।